(3) क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain or Conative Domain)

इसको अनेक नामों से जानते हैं जैसे मनोपेशीय उद्देश्य, मनःचालित उद्देश्य, मनोगत्यात्मक उद्देश्य आदि। इस उद्देश्य का सम्बन्ध विद्यार्थियों की शारीरिक क्रियाओं के प्रशिक्षण तथा कौशलों के विकास है। सिम्पसन (Simpson) ने इसका वर्गीकरण 1969 में किया। इसके अन्तर्गत नाड़ीतंत्र तथा मांसपेशियों का समन्वय आता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति पर विद्यार्थी मानचित्र खींचता है, रेखाचित्र खींचता है, उपकरणों का प्रयोग करता है, मॉडल बनाता है अर्थात इस स्तर पर शारीरिक क्रियाओं द्वारा विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इसको 05 वर्गों में विभाजित किया गया है —

(a) उत्तेजना या उद्दीपक (Impulsion) :— यह क्रियात्मक स्तर का प्रथम स्तर है। इस स्तर पर घटनाओं, वस्तुओं तथा कार्य के प्रति उत्तेजना लायी जाती है जिससे बालक अनुकरण कर सके। इसके लिए रुचि का होना आवश्यक है।

(b) कार्य करना (Manipulation) :— बालक उत्तेजना प्राप्त होने पर गत्यात्मक क्रिया करता है। यहाँ वह विभिन्न मांसपेशीय गतियों में विभेद करने के साथ-साथ अपने लिए उचित क्रियाओं का चयन करता है।

(c) नियन्त्रण (Control) :— बालक अपने द्वारा की गयी क्रियाओं को नियन्त्रित करता है। यहाँ बालक कार्य की शुद्धता, अनुपात तथा सत्य होने का ध्यान रखता है।

(d) सामंजस्य (Co-ordination) :— इस स्तर पर बालक क्रियाओं के नियन्त्रण के बाद विभिन्न क्रियाओं के बीच सामंजस्य का क्रम तथा एकरूपता बनाये रखता है।

(e) स्वाभावीकरण (Naturalization) :— यहाँ कार्य स्वाभाविक रूप से होने लग जाता है कार्य अन्तःचेतन रूप से भी होने लगता है।

Scanned with CamScanner

(F) आदत निर्माण (Formation of Habit) :—

क्रियात्मक पक्ष के विकास का यह शीर्षस्थ स्तर है। इसमें छात्र में कार्य की स्वचालित शैली का विकास, कम समय व कम शक्ति का व्यय करके कठिन कार्यों का कुशलता पूर्वक करना तथा कार्य निपुणता आती है। इस स्तर पर छात्र स्वाभाविक रूप से मानचित्र बनाना, ग्राफ या रेखाचित्र आदि बनाने लगता है।

ब्लूम की शैक्षिक लक्ष्यों के क्रमिक विस्तार के क्रम में व्यवहार परिवर्तन के रूप में अभिव्यक्त किया जाय तो वे अधिक स्पष्ट होंगे और शिक्षण की दिशा सुनिश्चित करने में सरलता होगी और शिक्षण के प्रभावशीलता का समुचित मापन एवं मूल्यांकन भी सम्भव हो पायेगा।

उपर्युक्त व्यवहार के तीनों पक्षों में सामंजस्य :—

उपर्युक्त ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों में पूर्णतया सामंजस्य रहता है। साथ ही प्रत्येक पक्ष अन्य दो पक्षों को प्रभावित करता है। मानचित्र खींचते समय तथा मानचित्र में आवश्यक सूचनाएँ दर्शाते समय सम्बन्धित सूचनाओं का ज्ञान तो होता ही है। इस प्रकार वास्तव में व्यवहार में तीनों पक्ष अलग-अलग नहीं हैं। चूँकि शिक्षण के समय व्यक्तित्व का कोई भी पक्ष ध्यान से ओझल न हो जाय, इसी तथ्य को ध्यान में रखकर तीनों पक्षों की दृष्टि से शिक्षण किया जाता है।

Scanned with CamScanner